॥ओ३म्॥
उप सर्प मातरं भूमिम्॥ (ऋ. 10/18/10) मातृभूमि की सेवा करो।

आर्य समाज के संस्थापक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

युवा निर्माण

ओ३म्
अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु
संस्कृति. शक्ति. सेवा.

आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश का मासिक मुखपत्र
(सार्वदेशिक आर्य वीर दल की एक इकाई)
युवकों का होता जहाँ चरित्र निर्माण, आर्य वीर दल है उसका नाम

वर्ष- 2, अंक- 2
माह- अप्रैल-मई 2018
पृष्ठ- 12

सृष्टि संवत्- 1,96,08,53,119
विक्रमी संवत्- 2075

प्रति शुल्क- 15/-
वार्षिक शुल्क-150/-
दयानन्दाब्द- 195

सार्वदेशिक आर्य वीर दल

के तत्त्वावधान में

चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर

स्थानः- गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, सराय ख्वाजा, फरीदाबाद, हरियाणा

दिनांकः- सोमवार 4 जून से रविवार 17 जून 2018 तक

(प्रशिक्षणः- शाखानायक श्रेणी, उप व्यायाम शिक्षक श्रेणी, व्यायाम शिक्षक श्रेणी)

(शिविर का पूर्ण विवरण पृष्ठ सं 10 पर देखें)

आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश (पंजी.)

(सार्वदेशिक आर्य वीर दल के अन्तर्गत)

चरित्र [illegible]र्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर

[illegible]कुल इन्द्रप्रस्थ, सराय ख्वाजा, [illegible], हरियाणा

दिनांक: [illegible] 15 जू[illegible] [illegible]विवार 24 जून 2018 तक

उद्घाटनः- रविवा[illegible] [illegible]विवार 24 जून, सायं 3.30 बजे

([illegible] पृष्ठ सं 11 पर देखें)

आर्य वीरांगना दल, दिल्ली प्रदेश

(आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश के अन्तर्गत)

के तत्त्वावधान में

विशाल चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर

स्थान- एम.डी.एच. इन्टरनेशनल स्कूल, पॉकेट-3, सेक्टर-6, द्वारका, दिल्ली

दिनांकः- रविवार 3 जून से रविवार 10 जून 2018 तक

उद्घाटनः- रविवार 3 जून, सायं 4 बजे

समापनः- रविवार 10 जून, सायं 4 बजे

(शिविर का पूर्ण विवरण पृष्ठ सं 2 पर देखें)

राष्ट्र की एकता व अखण्डता के लिए जातिवाद, प्रान्तवाद, भाषावाद व आरक्षण का त्याग करें।

॥ओ३म्॥

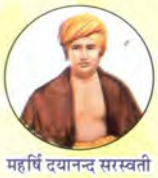

महर्षि दयानन्द सरस्वती

आर्य वीरांगना दल, दिल्ली प्रदेश

(आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश के अन्तर्गत)

के तत्त्वावधान में

विशाल चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर

स्थानः- एम.डी.एच. इन्टरनेशनल स्कूल, पॉकेट-3, सैक्टर-6, द्वारका, दिल्ली

दिनांकः- रविवार 3 जून 2018 से रविवार 10 जून 2018 तक

उद्घाटनः- 3 जून, रविवार सायं 4 बजे | **समापनः- 10 जून, रविवार सायं 4 बजे**

क्या आप चाहते हैं कि आपके परिवार की बेटियां निर्भीक होकर इस समाज में रहें?
क्या आप चाहते हैं कि आपकी बेटी का बौद्धिक, मानसिक व शारीरिक विकास हो?
क्या आप चाहते हैं कि आपकी बेटियां किसी भी समय अपने घर से निकलें तो उसे या परिवार को भयभीत न होना पड़े?
क्या आप चाहते हैं कि आपकी बेटी समाज व राष्ट्र के प्रति जागरूक हो और वैदिक संस्कारों से ओतप्रोत हो?
यदि हाँ.......तो इनको आर्य वीरांगना दल, दिल्ली प्रदेश के शिविर में अवश्य भेजें। इस शिविर में इनको आत्मरक्षा की विभिन्न विद्याओं के साथ-साथ अपने जीवन को आदर्श बनाने के लिए व्यक्तित्त्व विकास की शिक्षा, योग्य शिक्षिकाओं व विदुषियों द्वारा दी जाएगी।

★ शिविरार्थियों हेतु निर्देश ★

1. शिविरार्थी की आयु 12 वर्ष से अधिक हो। 2. शिविर शुल्क 300/- रुपये प्रति शिविरार्थी होगा एवं अपने साथ दो पासपोर्ट साईज फोटो लाएं। 3. कन्याओं को शिविर स्थल पर छोड़ने व वापसी ले जाने की जिम्मेदारी अभिभावकों की होगी। शिविरार्थी अपने साथ कोई भी कीमती सामान न लाएं। 4. शिविरार्थी भोजन के लिए थाली, गिलास, चम्मच, कटोरी, पानी की बोतल एवं ऋतु अनुकूल बिस्तर व कपड़े साथ लाएं। 5. शिविर गणवेश- दो जोड़ी सफ़ेद सलवार-कमीज, केसरिया दुपट्टा, सफेद पी.टी. शूज व जुराब साथ लाएं। 6. सभी शिविरार्थी 3 जून दोपहर 12 बजे तक शिविर स्थल पर अवश्य पहुंचे।

★ अपील ★

इस पुनीत कार्य में आप अपना सहयोग आर्य वीरांगना दल, दिल्ली प्रदेश के नाम नकद/चैक द्वारा तथा भोजन सामग्री जैसे- आटा, दाल, चावल, मसाले, दूध, देसी घी, फल, सब्जियाँ इत्यादि देकर पुण्य के भागी बनें।

★ निवेदक ★

शारदा आर्या	आर्या स्नेह भाटिया	आचार्या अमृता आर्या	आर्या सुनीति जावा	लिपिका आर्या
संचालिका	सह-संचालिका	मन्त्राणी	कोषाध्यक्षा	बौद्धिकाध्यक्षा
9971447372	9999642155	837086028	7838547100	9811203087I

आर्य वीरांगना दल, दिल्ली प्रदेश

जगवीर आर्य	सुन्दर आर्य	बृहस्पति आर्य	जितेन्द्र भाटिया
संचालक	सहसंचालक	महामन्त्री	कोषाध्यक्ष
9810264634	9899008054	9990232164	9811322155

आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश

संरक्षिका- ब्र० सुमेधा आर्या, वीना आर्या, सुनीति आर्या, डॉ. उमा शशी दुर्गा, पुष्पा महावर, ऊमा मोंगा, माता सोनी जी, सुधा आर्या

विशेष सहयोगी- डॉ. रचना चावला, विनय आर्य, बलदेव सचदेवा जी (प्र.प.दि.वेद प्र. मण्डल), बृजपाज आर्य, मेजर टी.आर.सागवान, ओ.पी.देवेश्वर, आचार्य हरिओम्

सहयोगी बहनें- सरोज पुरंग, पुष्पा पाहुजा, एकता तनेजा, विजय शर्मा जी, हर्ष आर्या, श्रद्धा आर्या, मीरा अरोड़ा, अन्जू सिंघल, संतोष सिंघल, अन्जू गुप्ता, उषा सरीन, सुदेश सागवान

सहयोगी भाई- क्रान्ति तनेजा, एस.के. कोचर, सुभाष आर्य, अशोक गुप्ता जी, हरिओम् बंसल जी, प्रवीण आर्य, विश्वास आर्य

उप-कार्यालयः- आर्य समाज बिरला लाइन्स, कमला नगर, दिल्ली-110007

ब्रह्मचर्य सन्देश

(गतांक से आगे)

प्रथम अध्याय-क्या यह विषय गोपनीय है?

हम एक गन्दे वातावरण में सांस ले रहे हैं। हरेक श्वास के साथ न जाने कितने गन्दे विचार हमारे दिमाग में जा पहुँचते हैं और न जाने कितने ही और, भीतर प्रविष्ट होने की तैयारी करने लगते हैं। नन्हे-नन्हे बालकों का मस्तिष्क तथा हृदय कोमलों कोपलों के फूटने और सुरभित कुसमों के खिलने से उल्लसित होने वाले नवयौवन में ही दुर्गन्धयुक्त कीचड़ से भर जाता है। आठ या दस वर्ष के बालक के चेहरे को देखने से कुछ पता नहीं चलता परन्तु उसके बन्द हृदय-कपाट को खोल कर देखा जाय तो अन्दर एक भट्टी धधकती नज़र आती है जिसकी लपटों से-जो थोड़ी ही देर में प्रचण्ड रूप धारण कर लेंगी-वह बालक झुलसने वाला होता है। वह नहीं चाहता कि उसके भीतर झांका जाय। इसका विचार ही उसे कंपा देता है, नख से शिख तक हिला देता है। वह जानता है, उसके भीतर कीचड़ की दलदल जमा हो रही है, भस्म कर देने वाली आग सुलग रही है। किसी अज्ञात प्रेरणा से वह किसी को अपने अन्तःकरण में झांकने नहीं देता-परन्तु फिर भी इकला बैठकर वह भीतर के इन्हीं छिपे हुए पर्दों को उठा-उठा कर उनकी झांकियाँ लिया करता है, भीतर जमा किये गये 'गुप्त रहस्यों' को उलट-पलट कर देखा करता है।

हाय वे रहस्य! वे गुप्त रहस्य ही तो बालक की आत्मा को चाट जाते हैं। प्रारम्भ में वह इन रहस्यों को चाटना चाहता है। अपने दो-चार हमजोलियों से कुछ पूछता है, पर वे कनखियाँ चलाते और शैतान की हँसी हँस देते हैं। जो इन 'रहस्यों' को रहस्य न समझे वह भोला, उसका मजाक उड़ा है, उसे उल्लू बनाया जाता है। चारों तरफ का समाज गन्दा है-अत्यन्त गन्दा। इन रहस्यों को रहस्य कहकर उन्हें दबाया नहीं जाता, मिटाया नहीं जाता, परन्तु अक्ल को अंगूठा दिखा देने वाले उपायों से, समाज की गोद में पलने वाले हरेक बच्चे के गले के नीचे उतारा जाता है। वही भोला बालक जो कुछ समय पहले रहस्यों से कोरा था समय गुजरने पर यारों की महफिल में 'छंटा हुआ' गिना जाता है। गुप्त बातें न जाने किस गुप्त रूप से उसके दिमाग को भर देती हैं। शान्त प्रकृति चंचल हो उठती है, आग में लपटें उठने लगती हैं, समुद्र ज्वार आ जाता है।

समाज कहता है यह विषय गोपनीय है। माता-पिता कहते हैं, चुप रहो, इस पर एक शब्द भी मत हमारे बेटे के कान में मत डालो। अध्यापक लोग बालक को स्पष्ट रूप से कुछ नहीं कहना चाहते। बालक के हृदय में प्रकृति की हर वस्तु को देखकर उत्सुकता उत्पन्न होती है, इन 'गुप्त रहस्यों' के विषय में भी उसे उत्सुकता सताने लगती है। परन्तु वह देखता है कि इस विषय की कोई बात भी उसके होठों पर पहले ही उसका गला घोंट दिया जाता है। 'चुप रहो', आगे से इस बात को जबान से मत निकालो!-चारों तरफ चुप्पी!, चुप्पी! सब स्वाभाविक रास्ते बन्द देखकर बालक अपना रास्ता स्वयं निकाल लेता है। यह चुप्पी बोलने से ज्यादा तबाही मचा देती है। माता-पिता के, अध्यापकों के, गुरुओं के बिना सिखाये बालक बहुत कुछ सीख जाता है-थोड़े ही समय में इतना सीख जाता है जिसे भुलाने के लिए एक जन्म तो क्या कई जन्म भी काफी नहीं हो सकते। वह जो कुछ सीख जाता है उसे देखकर माता-पिता सिर धुनते हैं, गुरु लोग आंसू बहाते हैं और उसका जीवन खिले हुए फूल की पंखुड़ियों को मसल देने के समान मुरझा जाता है। क्रमशः....

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का शिविर इलाहबाद में

स्थानः- आर्य कन्या इन्टर कॉलेज, मुट्ठीगंज, इलाहबाद, उत्तर प्रदेश

दिनांकः- रविवार 27 मई से रविवार 3 जून 2018 तक

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के तत्त्वावधान में विशाल चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर के माध्यम से नारी शक्ति को आत्मनिर्भर बनाते हुये उनके श्रेष्ठ जीवन का निर्माण करना ही शिविर का मुख्य उद्देश्य होता है। कृपया अधिक से अधिक वीरांगनायें शिविर में पहुँच कर इस अवसर का लाभ उठायें।

साध्वी डॉ० उत्तमा यति	मृदुला चौहान	आरती खुराना	विमला मलिक
प्रधान संचालिका	संचालिका	सचिव	कोषाध्यक्ष
9672286863	9810702760	9910234595	7289915010

कबड्डी प्रतियोगिता सम्पन्न

आर्य वीर दल के अन्तर्गत संचालित गुरु विरजानन्द शाखा पंजाबी बाग एवं मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम शाखा मोती नगर की कबड्डी प्रतियोगिता का आयोजन रविवार दिनांक 22 अप्रैल 2018 को आर्य समाज पंजाबी बाग में किया गया।

इस प्रतियोगिता में प्रत्येक शाखा से 2-2 टीमों ने भाग लिया। **श्री दिनेश आर्य** जी निर्णायक के रूप में उपस्थित रहे। **प्रतियोगिता का शुभारम्भ आर्य समाज के धर्माचार्य श्रीमान् आनन्द आर्य जी की धर्मपत्नी श्रीमती रंजना जी द्वारा किया गया।** इस प्रतियोगिता में संघर्ष करते हुए सीनियर टीम 17-10, 10-7, 19-17 तथा जूनियर टीम 15-9, 16-3, दोनों मुख्य पुरस्कार मोती नगर शाखा ने अपने अन्तर्गत किये। इनके अलावा भी प्रत्येक आर्यवीर को प्रोत्साहन रूप में सम्मान प्रदान किया गया। आर्यवीरों को सम्मान **श्री धर्मवीर आर्य (उप प्रधान शिक्षक दिल्ली प्रदेश)** द्वारा प्रदान किये गये। प्रतियोगिता के पश्चात् सभी के लिए जलपान की व्यवस्था आर्य समाज पंजाबी बाग की ओर से की गई।

मनोज आर्य (शाखानायक)

महिला आत्मरक्षा शिविर सम्पन्न

आर्य वीरांगना दल शाखा सी-3 जनकपुरी एवं महिला दिल्ली पुलिस के तत्त्वावधान में आर्यसमाज मन्दिर सी-3 जनकपुरी में सोमवार दिनांक 2 अप्रैल से मंगलवार 17 अप्रैल 2018 तक **''वीरांगना आत्मरक्षा शिविर''** आयोजित किया गया। इस शिविर में महिला पुलिस की ओर से प्रशिक्षण देने हेतु मीनाक्षी व कविता जी द्वारा आर्य वीरांगनाओं को प्राशिक्षण दिया गया। इस शिविर में 110 आर्य वीरांगनाओं ने भाग लिया और आत्मरक्षा के गुर सीखे। इस शिविर के आयोजन में श्रीमती उमा मोंगा जी का अथक प्रयास रहा। शिविर में पुरस्कार जलपान प्रसाद आदि की सभी व्यवस्थायें श्रीमान् गोपाल कृष्ण सेठी जी की ओर से की गई। इस शिविर के समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में आमन्त्रित श्रीमान् शिवकुमार मदान जी (प्रधान- आर्यसमाज सी-3 जनकपुरी) द्वारा सभी आर्य वीरांगनाओं को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया और कहा कि इस प्रकार के शिविरों की अति आवश्यकता है जो महिलाओं को सशक्त बनाने में योगदान देते हैं।

माता उमा मोंगा (जनकपुरी सी-3)

कार्यशाला समपन्न

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश की ओर से रविवार, दिनांक 6 मई 2018 को दल के मुख्य कार्यालय मिण्टो रोड पर कार्यशाला का

आयोजन किया गया। इसमें विशेष रूप से दल के व्यायाम शिक्षकों, उप व्यायाम शिक्षकों

एवं शाखानायकों ने भाग लिया। बैठक में जून में आयोजित होने वाले प्रान्तीय शिविर पर विस्तृत चर्चा की गई। साथ ही सार्वदेशिक आर्य वीर दल के राष्ट्रीय शिविर में जाने वाले शाखानायकों को शुभकामनायें दी। प्रान्तीय शिविर में व्यवस्थाओं के अन्तर्गत निम्न-लिखित बिन्दुओं पर चर्चा की गई

जिसमें मुख्यतः सुरक्षा व्यवस्थायें, प्रशिक्षण में सुधार, गणवेश की पूर्णता, शिक्षकों की व्यवस्थायें, शिविर में अधिक से अधिक आर्यवीरों का प्रवेश, क्षेत्रीय बैठक व प्रचार-प्रसार पर विचार किया गया। अन्त में सभी ने उत्साह के साथ प्रान्तीय शिविर को सफल बनाने के लिए संकल्प लिया।

गतांक से आगे...

आर्य वीर दल का इतिहास

पूर्वी बंगाल से आर्य हिन्दू शरणार्थियों का शिविर सीमा के पास लगा हुआ था। पाकिस्तानी सीमा केवल 100 मीटर दूर थी। यहाँ पाकिस्तानी अंसार गुण्डों से अनेक बार आर्यवीरों की झड़पें हुई और उन्हें पीछे धकेल दिया। ऐसी ही घटना जयनगर के समीप हुई। पाकिस्तान सीमा को पार करके अंसार गुण्डों ने भारतीय चौकी पर आक्रमण करके अपना झण्डा गाढ़ने का प्रयास किया। इस समय शिविर में भारतीय पुलिस के केवल चार सिपाही थे जिनमें से एक रोगी था। श्री ओमप्रकाश त्यागी (सेनापति- आर्य वीर दल) उस शिविर को सँभाल रहे थे। दोनों ओर से कुछ घण्टे तक गोलियाँ चलीं। अपनी दाल गलती न देख अंसार गुण्डे मैदान छोड़कर भाग खड़े हुए। उनसे छीना पाकिस्तानी झण्डा अब भी आर्य वीर दल के शौर्य को याद दिला रहा है।

हैदराबाद के मुक्ति संग्राम का प्रारम्भ तो आर्यवीरों ने ही किया था। तीन आर्यवीरों ने निजाम की कार पर बम फैंकने की योजना बनाई। योजनानुसार बम फैका गया, परन्तु वह फटा नहीं। इससे पहले दूसरी कार्यवाही की जाये, निजाम के अंगरक्षकों ने नारायणराव को दबोच लिया। उसे भयंकर यातनायें दी गई, परन्तु उसने साथियों के नाम नहीं बतलाये।

उमरी कस्बे में हैदराबाद के निजाम का बैंक था। आर्यवीरों ने योजनाबद्ध तरीके से उसमें से 30 लाख रुपया लूटकर सरदार पटेल के सुपुर्द कर दिया। इसी भाँति उद्गीर के भाई श्यामलाल धारुर, जिला बीड़ के नवयुवक काशीराम, हुमनाबाद के शहीद वेदप्रकाश, श्री कृष्णराव जी ईटेकर और अन्य बहुत से आर्यवीरों ने स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए अपने जीवन की आहुतियाँ देकर हैदराबाद को मुक्त कराने का श्रेय प्राप्त किया। हैदराबाद में पुलिस एक्शन के समय सारा कार्यभार आर्यवीरों पर ही था। इसलिए सरदार पटेल को कहना पड़ा कि यदि आर्यसमाज का सहयोग न होता तो सरकार को हैदराबाद को विजय करना कठिनतम होता। वस्तुतः इस रियासत की विजय का सम्पूर्ण श्रेय आर्यवीरों को ही जाता है।

क्रमशः

वेद स्वाध्याय

(गतांक से आगे)

-स्वामी देवव्रत सरस्वती

7. सूर्य किरणों से ऊर्जा

अभूदु वा उ अंशवे हिरण्यं प्रति सूर्यः।

व्यख्यज्जिह्वयासितः॥ ऋ0 1/46/10

अर्थ- हे अश्विनौ! (सूर्य-चन्द्रमा की किरणों पर अनुसन्धान करने वाले शिल्पजनो) **(यथा)** जैसे **(सूर्यः)** सूर्य का प्रकाश **(हिरण्यम् प्रति)** सुवर्ण के समान चमकीले पदार्थ पर पड़ता है तब उसकी **(भाः)** दीप्ति **(उ)** निश्चय से **(अंशवे)** किरण पुंज के रूप में **(अभूत)** प्रकट होती है और वह **(असितः)** काष्ठ आदि के आश्रय के बिना ही **(जिह्वया)** ज्वाला के रूप में प्रकट होता है।

सूर्यकान्त मणि और चन्द्रकान्त मणि से हम परिचित हैं। उत्तल लैंस (आतशी शीशा) द्वारा सूर्य किरणों को जब हम एक बिन्दु पर केन्द्रित करते हैं तो वहाँ अग्नि प्रकट हो जाती है। इसी भाँति चन्द्रकान्त मणि को चन्द्रमा की किरणों में रख देने पर उससे पानी की बून्दें टपकने लगती हैं जिन्हें हृदय रोग में सर्वात्तम औषध आयुर्वेद में माना गया है। आईने-अकबरी में भी इसका वर्णन आया है। वर्तमान समय पर यह कहीं पर भी देखने में नहीं आती। ऐसी बहुत सी चमत्कारी वस्तुएं इस देश में थीं जिनका अभाव हो गया है।

वर्तमान में सूर्यकान्त मणि द्वारा सूर्य किरणों को एक स्थान पर केन्द्रित करके अनेक कार्य किये जा रहे हैं। इसी सिद्धान्त के आधार पर मृत्यु किरण (लेजर बीम) कार्य करती है जिसे किसी वस्तु पर केन्द्रित किये जाने पर वह तत्काल भस्म हो जाती है। यह बहुत ही घातक अस्त्र है जो दिखाई भी नहीं देता। इससे शत्रु के रॉकेट, विमान आदि भी निष्क्रिय किये जाते सकते हैं।

प्रस्तुत मन्त्र में सूर्य किरणों को एक बिन्दु पर किसी चमकीले धरातल पर परावर्तित करने की उपयोगिता बताई है। जब ऐसे धरातल पर सूर्य किरणें पड़ती हैं तो वह चमकने लगता है और सूर्य किरणों को परावित्तत करता रहता है। यदि इस धरातल को उन्नतोदर बना दिया जाये तो वह इन किरणों को एक बिन्दु पर केन्द्रित कर वहाँ ऊर्जा का घनत्व बढ़ा देगा। भोजन बनाने वाली छतरी या चूल्हा इसी सिद्धान्त पर कार्य करता है।

आजकल सूर्य किरणों को विद्युत में बदल देने वाले अनेक उपकरण टार्च, बैटरी, चार्जर आदि प्रचलन में आ गये हैं जिन्हें धूप में रख देने पर उनकी बैटरी चार्ज हो जाती है। उनमें सिलिकन लगा होता है जो सूर्य किरणों को सीधा ऊर्जा में परावर्तित कर देता है। महर्षि भारद्वाज रचित विमान शास्त्र में सूर्य की किरणों द्वारा चलने वाले विमानों का वर्णन आया है। वर्तमान विज्ञान ने ऐसे राकेट और विमान बनाये हैं जो सौर ऊर्जा से संचालित होते हैं। अधिकांश वाहन पैट्रोल द्वारा संचालित होते हैं और कल-कारखानों एवं विद्युत उत्पादन के लिए कोयले को प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया जाता है। इनके स्रोत धीरे-धीरे सीमित होते जा रहे हैं। इनसे प्रदूषण भी बहुत अधिक मात्रा में होता है। इनका विकल्प सूर्य किरणों से विद्युत उत्पादन करना और वाहन चलाना सबसे सुरक्षित उपाय है जिन पर अनेक देशों में प्रयोग चल रहे हैं। कुछ स्थानों में कार्य प्रारम्भ भी हो गया है। सूर्य ऊर्जा का अक्षय भण्डार है जिससे प्रदूषण की समस्या का समाधान भी हो जायेगा। और विशाल स्तर पर कार्य प्रारम्भ करने पर अधिक व्यय भी नहीं आयेगा।

सूर्य से पराबैंगनी किरणों का उत्सर्जन भी होता है। चिकित्सा की दृष्टि से लाल, नीला, पीला, हरा रंग जिस कांच की बोतल का है, उसमें पानी भर कर काष्ठ के टुकड़े पर कुछ दिन सूर्य के प्रकाश में रख देने पर इसमें चिकित्सकीय गुण आ जाते हैं। इस पानी को अनेक रोगों में पिलाया जाता है। ऐसे ही तेल भी बनाये जाते हैं। पीड़ित अंग पर इन रंगों वाला प्रकाश डाला जाता है। रंगों द्वारा चिकित्सा करने का तन्त्र ही विकसित हो गया है

हमारे ऋषि-मुनियों ने सूर्य किरणों के इन गुणों को जानकर प्रात:कालीन उगते सूर्य के दर्शन और सूर्य के प्रकाश में सूर्य नमस्कार आदि व्यायाम करने का विधान किया है। पाण्डुरोग और हृदय रोगों की चिकित्सा सूर्य किरणों द्वारा करने का वर्णन वेद में आया है। इसी दिशा में पर्याप्त अन्वेषण करने की आवश्यकता है। मन्त्र में सौर ऊर्जा के उपयोग को सूत्र मात्र में कहा गया है।

क्रमशः

व्यवहारभानु

(गतांक से आगे)

अनाहुतः प्रविशति अपृष्टो बहु भाषते।
अविश्वश्ते विश्वसिति मूढचेता नराधमः॥

(महाभारत उद्योगपर्व विदुरप्रजागर, अ० 32)

जो बिना बुलाये जहाँ-तहाँ सभादि स्थानों में प्रवेश कर सत्कार और उच्चासन को चाहे वा ऐसी रीति से बैठे कि सब सत्पुरुषों को उसका आचरण अप्रिय विदित हो, बिना पूछे बहुत अण्ड-बण्ड बके और अविश्वासियों में विश्वासी होकर सुख की हानि कर लेवे वही मनुष्य मूढ़बुद्धि और मनुष्यों में नीच कहाता है।

जहाँ ऐसे-ऐसे मूढ़ मनुष्य पठनपाठन आदि व्यवहारों को करने हारे होते हैं वहाँ सुखों का तो दर्शन कहाँ? किन्तु दुःखों की तो भरमार हुआ ही करती है। इसलिए बुद्धिमान लोग ऐसे-ऐसे मूढ़ों का प्रसंग वा इनके साथ पठनपाठनक्रिया को व्यर्थ समझकर पूर्वोक्त धार्मिक विद्वानों का प्रसंग और उन्हीं से विद्या का अभ्यास और सुशील बुद्धिमान विद्यार्थियों को ही पढ़ाया करें। विद्वान और मूर्ख के लक्षण विधायक श्लोक विदुरप्रजागर के 32 अध्याय में एक ही ठिकाने लिखे हैं।

जो विद्या पढ़ें और पढ़ावें वे निम्नलिखित दोषयुक्त न हों-

आलस्यं मदमोहौ च चापल्यं गोष्ठिरेव च।
स्तब्धता चाभिमानत्वं तथाऽत्यागित्वमेव च।
एतै वै सत्प दोषाः स्युः विद्यार्थिनां मता॥
सुखार्थिनः कुतो विद्या नास्ति विद्यार्थिनः सुखम्।
सुखार्थी वा त्यजेद्विद्यां विद्यार्थी वा त्यजेत्सुखम्॥

आलस्य, अभिमान, नशा करना, मूढ़ता, चपलता, व्यर्थ इधर-उधर की अण्डबण्ड बातें करना, जड़ता, कभी पढ़ना कभी न पढ़ना, अभिमान और लोभ लालच ये सात विद्यार्थियों के लिए विद्या के विरोधी दोष हैं। क्योंकि जिसको सुख चैन करने की इच्छा है उसको विद्या कहाँ और चित्त विद्या ग्रहण करने में लगा है उसको विषय सम्बन्धी सुख चैन कहाँ? इसलिए विषयसुखार्थी विद्या को छोड़ें और विद्यार्थी विषयसुख से अवश्य अलग रहें। नहीं तो परमधर्मरूप विद्या का पढ़ना-पढ़ाना कभी नहीं हो सकेगा।

प्र०-कैसे-कैसे मनुष्य सब विद्याओं की प्राप्ति करा सकते हैं?

उ०- **भीष्म जी युधिष्ठिर से कहते हैं कि-** हे राजन् ! तू ब्रह्मचर्य के गुण सुन। जो मनुष्य इस संसार में जन्म से लेके मरणपर्य्यन्त ब्रह्मचारी होता है उसको कोई शुभगुण अप्राप्त नहीं रहता ऐसा तू जान कि जिसके प्रताप से अनेक क्रीड़ ऋषि ब्रह्मलोक अर्थात् सर्वानन्दरूप परमात्मा में वास करते हैं और इस लोक में भी अनेक सुखों को प्राप्त होते हैं।

जो निरन्तर सत्य में रमण, जितेन्द्रिय, शान्तात्मा, उत्कृष्ट, शुभगुण स्वभावयुक्त और रोगरहित पराक्रमसहित शरीर, ब्रह्मचर्य अर्थात् वेदादि और सत्य शास्त्र और परमात्मा की उपासना का अभ्यास कर्मादि करते हैं उनके वे सब बुरे काम और दुःखों को नष्ट कर सर्वोत्तम धर्मयुक्त कर्म और सब सुखों की प्राप्ति करानेहारे होते हैं और इन्हीं के सेवन से मनुष्य उत्तम अध्यापक और विद्यार्थी हो सकते हैं। **क्रमशः......**

आर्योद्देश्यरत्नमाला

(गतांक से आगे)

21. **स्तुति-** जो ईश्वर वा किसी दूसरे पदार्थ के गुण, ज्ञान, कथन, श्रवण और सत्यभाषण करना, वह स्तुति कहाती है।

22. **स्तुति कर फल-** जो गुण-गान आदि के करने से गुण वाले पदार्थों में प्रीति होती है, वह स्तुति का फल कहाता है।

23. **निन्दा-** जो मिथ्याज्ञान, मिथ्याभाषण, झूठ में आग्रहादि क्रिया, जिससे कि गुण छोड़कर उसके स्थान में अपगुण लगाना होता है, वह निन्दा कहाता है।

24. **प्रार्थना-** अपने पूर्ण पुरुषार्थ के उपरान्त उत्तम कर्मों की सिद्धि के लिए परमेश्वर वा किसी सामर्थ्य वाले मनुष्य के सहाय लेने को प्रार्थना कहते हैं।

25. **प्रार्थना का फल-** अभिमान का नाश, आत्मा में आर्द्रता, गुणग्रहण में पुरुषार्थ और अत्यन्त प्रीति का होना, प्रार्थना का फल है।

26. **उपासना-** जिससे ईश्वर ही के आनन्द स्वरूप में अपने आत्मा को मग्न करता है, उसको उपासना कहते हैं।

27. **निर्गुणोपासना-** शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, संयोग, वियोग, हल्का, भारी, अविद्या, जन्म, मरण और दुःख आदि गुणों से रहित परमात्मा को जानकर उसकी उपासना करनी है, उसको निर्गुणोपासना कहते हैं।

28. **सगुणोपासना-** जिसको सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, शुद्ध, नित्य, आनन्द, सर्वव्यापक, एक सनातन, सर्वकर्त्ता, सर्वाधारा, सर्वस्वामी, सर्वनियन्ता, सर्वान्तर्यामी, मंगलमय, सर्वानन्दप्रद, सर्वपिता, सब जगत् का रचनेवाला, न्यायकारी, दयालु आदि सत्यगुणों से युक्त जानके जो ईश्वर की उपासना करनी है, सो सगुणोपासना कहाती है।

29. **मुक्ति-** अर्थात् जिससे सब बुरे कामों और जन्म-मरणादि दुःख सागर से छूटकर सुखस्वरूप परमेश्वर को प्राप्त होके सुख में ही रहना है, वह मुक्ति कहाती है।

30. **मुक्ति के साधन-** अर्थात् जो पूर्वोक्त ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना का करना, धर्म का आचरण और पुण्य का करना, सत्संग, विश्वास, तीर्थ सेवन, सत्पुरुषों का संग और परोपकारादि सब अच्छे कामों का करना, तथा सब दुष्ट कर्मों से अलग रहना है, ये सब मुक्ति के साधन कहाते हैं। **क्रमशः.......**

महर्षि दयानन्द जी द्वारा लिखित अपना जन्मचरित्र

गतांक से आगे.......

फिर वे स्वामी जी द्वारिका की ओर चले गये। मैं कुछ दिन चाणोद कन्याली में रह के व्यासाश्रम में एक योगानन्द स्वामी को सुना कि वे योगाभ्यास में अच्छे हैं उनके पास जाके योगाभ्यास की क्रिया सीख के एक कृष्ण शास्त्री छिनौर शहर के बाहर रहते थे। उनको सुनके व्याकरण पढ़ने के लिए उनके पास गया और कुछ व्याकरण का अभ्यास करके फिर चणोद में आकर ठहरा। वहाँ दो योगी मिले जिनका नाम ज्वालानन्दपुरी और शिवानन्द गिरि था। उनसे भी योगाभ्यास की बातें हुई और उन्होंने कहा कि तुम अहमदाबाद में आओ वहाँ हम नदी के ऊपर दूधेश्वर महादेव में ठहरेंगे। वहाँ आवेंगे तो योगाभ्यास की रीति सिखलावेंगे। वहाँ से वे अहमदाबाद को चले गये फिर एक महीने के पीछे मैं भी अहमदाबाद में जाके उनसे मिला और योगाभ्यास की रीति सीखी। फिर आबूराज पर्वत में योगियों को सुनके वहाँ जाके अर्वदा भवानी आदि स्थानों में भवानीगिरि आदि योगियों से मिल के कुछ और योगाभ्यास की रीति सीख के संवत् 1911 के वर्ष के अन्त में हरिद्वार के कुम्भ मेले में आके बहुत साधु-सन्यासियों से मिला और जब तक मेला रहा तब तक चण्डी के पहाड़ के जंगल में योगाभ्यास करता रहा। जब मेला हो चुका तब हृषीकेश में जाके सन्यासियों और योगियों से योग की रीति सीखता और सत्संग करता रहा।

फिर वहाँ से एक ब्रह्मचारी और दो पहाड़ी साधु मेरे साथ आये। हम सब जने टिहरी में आये वहाँ बहुत साधु सन्तों से समागम हुआ। वहाँ एक पण्डित ने एक दिन मुझे और ब्रह्मचारी को अपने घर में भोजन करने के लिए निमन्त्रण दिया। समय पर एक मनुष्य बुलाने को आया। तब मैं और ब्रह्मचारी भोजन करने को गये। जब उसके घर के द्वार में घुस कर के देखा तो एक ब्राह्मण मांस को काटता था। उसको देखकर जब भीतर गये तब बहुत से पण्डितों को एक सामियाने के भीतर बैठे देखे और वहाँ बकरे का मांस, चमड़ा और सिर देख के पीछे लौटे। पण्डित देख के बोला कि आइये। तब मैंने उत्तर दिया कि आप अपना काम कीजिये। हम बाहर जाते हैं। ऐसा कहकर अपने स्थान चले आये। तब पण्डित भी हमको बुलाने आया। उनसे मैंने कहा कि तुम सूखा अन्न भेज दो हमारा ब्रह्मचारी बना लेगा। पण्डित बोले कि आपके लिए तो सब पदार्थ बनाये हैं। मैंने उनसे कहा कि आप के घर में मुझसे भोजन कदापि न किया जावेगा। क्योंकि आप लोग मांसाहारी हैं और मुझको देखने से घृणा आती है। फिर पण्डित ने अन्न भेज दिया।

क्रमशः.........

संगठन गीत

संगठन हम करें, आपदों से लड़ें, हमने ठाना,
हम बदल देंगे सारा ज़माना।।

वीर प्रताप के शेर जागो, वीर बन्दा की शमशीर जागो,
बज रहा है बिगुल, नौजवाँ तू निकल, रण में जाना,
हम बदल देंगे सारा ज़माना।।1।।

शेर शिवराज की तेग खड़के, ध्वनि हर-हर महादेव भड़के,
शक्ति हो साथ में ओ३म् ध्वज हाथ में, बढ़ते जाना,
हम बदल देंगे सारा ज़माना।।2।।

चाहे आँधी या तूफान आये, वर्षा, ओले या बादल हों छाए,
हम रुकेंगे नहीं और झुकेंगे नहीं, बढ़ते जाना,
हम बदल देंगे सारा ज़माना।।3।।

आर्यवीरों ने यह राग गाया, वैदिक राज्य का डंका बजाया,
हम जियें या मरें, छल-बलों से लड़ें हमने ठाना,
हम बदल देंगे सारा ज़माना।।4।।

वास्तविक गुरू के लक्षण

- ★ **वेद और वेदानुकूल ऋषिकृत ग्रंथों के पठन-पाठन को मुक्ति का साधन मानने वाला हो।**
- ★ **सत्यमानि, सत्यवादि, सत्यकारी हो।**
- ★ **पुत्रैषणा, वित्तैषणा, लोकैषणा का त्यागी हो।**
- ★ **ईश्वर, जीव और प्रकृति को पृथक-पृथक मानने वाला हो।**
- ★ **स्वयं अष्टांग योग का अनुष्ठान करने वाला हो।**
- ★ **सकाम कर्मों को छोड़कर निष्काम करने वाला हो।**
- ★ **अपनी उन्नति के तुल्य प्राणी मात्र की उन्नति चाहने वाला हो।**
- ★ **पक्षपात रहित न्यायकारी हो।**
- ★ **मद्य, मांस आदि अभक्ष्य, खान-पान करने वाला न हो।**
- ★ **मोक्ष की प्राप्ति करने-करवाने को मानव जीवन का मुख्य लक्ष्य मानने वाला हो।**
- ★ **वेद, दर्शन, उपनिशद आदि ग्रंथों में वर्णित योग विद्या का प्रचार-प्रसार करने वाला हो।**

कबड्डी प्रतियोगिता सम्पन्न

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश पूर्वी क्षेत्र के अन्तर्गत संचालित शहीद भगत सिंह शाखा, प्रीत विहार के तत्त्वावधान में विशाल कबड्डी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। यह प्रतियोगिता दिनांक 12-13 मई 2018 को आर्य समाज प्रीत विहार में आयोजित की गई जिसमें मुख्य अतिथि के रुप में **श्री ओम् प्रकाश शर्मा (विधायक भ.ज.पा.), श्री रजत कुमार (जिला मंत्री, भ.ज.पा. शाहदरा), श्री ज्ञानेन्द्र अवाना (आई.पी.एस., दिल्ली पुलिस), श्री जितेन्द्र भाटिया (कोषाध्यक्ष आ.वी.द.)** जी को आमंत्रित किया गया। संगठन की शाखाओं के अतिरिक्त अन्य स्कूलों से भी प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान सद्भावन अकादमी (प्रीत विहार), द्वितीय स्थान आर्य वीर दल (विकास पुरी शाखा डी ब्लाक), तृतीय स्थान ईगल अकादमी (चिल्ला गाँव) प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता में मुख्य रूप से श्री प्रेम आर्य, श्री सूरज आर्य, श्री विनीत आर्य ने मुख्य निभाते हुये कार्यक्रम को सफल बनाया। आर्य समाज प्रीत विहार के प्रधान **श्री सुरेन्द्र कुमार रैली** जी का विशेष आशीर्वाद इस आयोजन में रहा। उन्हीं के अथक प्रयास से यह शाखा विभिन्न क्षेत्रों में गति प्रदान कर रही है।

सूरज आर्य (व्यायाम शिक्षक)

संगठनात्मक कार्यशाला

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में दल द्वारा संगठनात्मक एवं चिन्तन कार्यशाला का विशेष आयोजन रविवार 8 अप्रैल 2018 को आर्य समाज मोती नगर में किया गया। इस कार्यशाला में संगठन के मुख्य अधिकारी, क्षेत्रीय अधिकारी, व्यायाम शिक्षक, शाखानायक एवं वरिष्ठ आर्यवीरों ने भाग लिया। कार्यशाला के अन्तर्गत् संठनात्मक विषय पर विस्तृत चर्चा करते हुए सभी को अवगत् कराया कि संगठन की मजबूती में सभी का अहम योगदान सम्मिलित है। क्षेत्रीय इकाइयों को मजबूती प्रदान करने के लिए प्रत्येक क्षेत्रीय अधिकारी को अपना अहम योगदान देना अनिवार्य है। संगठन के महत्व को समझते हुए प्रत्येक अधिकारी अपने कीमती समय से समय निकाल कर संगठन को सहयोग करे जिससे भविष्य में संभावित योजनाओं को मजबूती मिले। प्रत्येक क्षेत्रीय अधिकारी को आपस में तालमेल व समन्वय बनाकर रहना चाहिए। जिससे संगठन नियमित गतिशील रहे। इस कार्यशाला के अध्यक्ष रूप में नियुक्त श्रीमान् सुन्दर आर्य जी ने आये हुए संगठन के सभी अधिकारियों का हृदय से धन्यवाद किया।

-दिनेश आर्य (प्रधान शिक्षक, आ.वी.द.दि.प्र.)

शिविर गीत

जीवन में नया उभार-उभार, ये शिविर आर्यवीरों का।
चार बजे सब उठना सीखें, कसें लंगोट कुछ करते दीखें,
दण्ड-बैठक आसन धार हो धार, ये शिविर आर्यवीरों का।।1।।

नहा-धोकर के हवन रचावें, मिल प्रेम से भोजन खावें,
अन्नपते उच्चार-उच्चार, ये शिविर आर्यवीरों का।।2।।

जहाँ रहें वहाँ करें सफाई, पढ़ने की यह विधि बताई,
जिसे समझे युवक भार हो भार, ये शिविर आर्यवीरों का।।3।।

बौद्धिक देकर बुद्धि बढ़ावें, जीवन उपयोगी बात बतावें,
जिससे युवकों का हो उद्धार-उद्धार, ये शिविर आर्यवीरों का।।4।।

लाठी के व्यायाम सिखावें, खेलन के भी ढँग बतावें,
जिससे बढ़े आपस में प्यार हो प्यार, ये शिविर आर्यवीरों का।।5।।

रात्रि को मनोरंजन होता, मन्त्र बोलकर हर कोई सोता,
अन्त में **'धन'** कुमार हो कुमार, ये शिविर आर्यवीरों का।।6।।

आर्यवीरों का सम्मान

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के अन्तर्गत संचालित मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम शाखा, मोती नगर बीते 4 वर्षों से अनेक सामाजिक हितकारी कार्यक्रमों में भाग लेकर युवा वर्ग को आर्य विचारधारा से

जोड़ रही है। मुख्यत: मोती नगर के विभिन्न स्थानों पर जाकर सामाजिक बुराईयों के खिलाफ जनजागरण का अभियान चलाती है। साथ ही पार्कों में आर्य समाज के माध्यम से आयोजित पर्यावरण शुद्धि यज्ञोत्सव में विभिन्न सेवा कार्यों का निर्वहन किया। इस शाखा के शाखानायक श्री ज्ञानु आर्य, श्री रमेश आर्य की मेहनत एवं आर्यवीरों का उत्साह को देखते हुये आर्य समाज मोती नगर **के यशस्वी प्रधान श्री राज भारत भारद्वाज एवं मन्त्री श्रीमान् प्रवीण वधवा जी** ने आर्य समाज मोती नगर की ओर से शाखा के सभी आर्यवीरों को सम्मानित किया और आशीर्वाद देते हुये कहा कि युवा पीढ़ी हमारे देश का

भविष्य हैं। शाखाओं के माध्यम से इन बच्चों को जो भी शिक्षा दी जाती है, वह अनुकारणीय है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि इन सभी बच्चों का भविष्य उज्जवल बने।

रमेश आर्य (शाखानायक)

आओ करें जन्मोत्सव पर यज्ञ

आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश के अन्तर्गत संचालित आर्य वीरांगना शाखा, मंगोलपुरी की व्यायाम शिक्षिका कुमारी डिंपल आर्या के जन्मोत्सव पर आर्य समाज मंगोलपुरी में विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसमें यज्ञब्रह्मा श्रीमती आचार्या अमृता आर्या जी के सान्निध्य में यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में आर्य वीर दल दिल्ली

प्रदेश के प्रधान शिक्षक श्री दिनेश आर्य जी को विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया।

यज्ञ के उपरान्त आये हुये सभी अतिथियों ने कुमारी डिंपल आर्या को आशीर्वाद देते हुये उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल शिविर की विस्तृत सूचना

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सनापति स्वामी देवव्रत सरस्वती जी के अध्यक्षता में आयोजित

शिविर शुल्क 500 रु., पाठ्यपुस्तके शिविर की ओर से दी जायेंगी।

आवश्यक सामान- गणवेश खाकी हॉफ पेन्ट, दो सफेद सैण्डो बनियान, सफेद जूते-मोजे, लंगोट, लाठी, नोटबुक, हल्का बिस्तर थाली, लौटा एंव दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तुएं।

नोट: 1. शिविर में प्रवेश आर्यवीर श्रेणी उत्तीर्ण को ही दिया जायेगा। शिविरिर्थी की योग्यता मैट्रिक उत्तीर्ण होनी चाहिए। शिविर में प्रथम श्रेणी को प्रवेश नहीं मिलेगा।

2. शिविर में संध्या यज्ञ एवं प्राथिमिक चिकित्सा व व्यक्तित्व विकास का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया जायेगा।

मार्ग- नई दिल्ली , पुरानी दिल्ली से मैट्रो द्वारा सराय उतरें। बस द्वारा बदरपुर, सराय से रेलवे फाटक पार कर गुरूकुल पहुँचे।

<u>निवेदक</u>

ऋषिपाल आचार्य	**प्रवीण शास्त्री**	**आचार्य सत्यवीर आर्य**
(शिविर संयोजक)	(प्रधान, व्यायाम शिक्षक)	(महामंत्री सा.आ.वी.द.)
9811687124	7988115490	9414789461
मास्टर रामपाल	**विनय आर्य**	
(प्रधान आ.प्र.स., हरियाणा)	(महामंत्री आ.प.स., दिल्ली)	
9416874065	9958174441	

महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ओ३म्॥

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में

(अन्तर्गत सार्वदेशिक आर्य वीर दल)

संस्कृति. शक्ति. सेवा.

500 आर्यवीरों का दस दिवसीय आवासीय

चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर

स्थान- गुरूकुल इन्द्रप्रस्थ, सराय ख्वाजा, फरीदाबाद, हरि. **दिनांक-** शुक्रवार 15 जून से रविवार 24 जून 2018

उद्घाटन- 17 जून, रविवार, प्रातः 9.00 बजे **दीक्षान्त समारोह-** 24 जून रविवार, मध्याह्न 3.30 बजे

निर्भिक संन्यासी

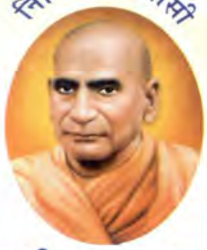

स्वामी श्रद्धानन्द जी
संस्थापक, गुरूकुल इन्द्रप्रस्थ

बन्धुओ!

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी युवाओं के चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व के विकास हेतु शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस वर्ष यह युवा निर्माण शिविर स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के अनन्य शिष्य, महान् राष्ट्रभक्त, वेदभक्त, वैदिक गुरूकुलीय प्रणाली के पुनःउद्धारक एवं संस्थापक, दलितोद्धारक, अनेकों क्रांतिकारियों के प्रेरणास्रोत, महात्मा गांधी को महात्मा की उपाधि से सुशोभित करने वाला, फतेहपुरी जामामस्ज़िद में वेद मंत्र के पाठ द्वारा एकता का संदेश देने वाला, अंग्रजों की संगीनों के सामने सीना तानने वाला निर्भिक संन्यासी स्वामी श्रद्धान्नद जी के द्वारा आरावली पर्वत की श्रृंखला पर प्राकृतिक सुंदरता में स्थापित गुरूकुल इन्द्रप्रस्थ में होने जा रहा है।

आशीर्वाद

महाशय धर्मपाल जी
MDH

इस युवा चरित्र निर्माण प्रशिक्षण शिविर में आप अपने बच्चों को भेजकर इनके चौमुखि व्यक्तित्व व श्रेष्ठ चरित्र का निर्माण करे व राष्ट्र का अच्छा नागरिक बनायें। इससे राष्ट्रीय चरित्र उत्तम बनेगा और राष्ट्र को समृद्धशाली व शक्तिशाली बनाया जा सकेगा।

★ शिविर के मुख्य आकर्षण ★

Meditation, Vedic ideology and effective time management

ध्यान, योग, यज्ञ व अनुशासित दिनचर्या द्वारा प्रातः 4 बजे से रात्रि 10 बजे तक युवाओं को स्वस्थ जीवनशैली को अपनाने के लिए प्रेरित करना।

Physical fitness and self defense

अत्यधिक व्यस्त जीवन में शारीरिक स्वास्थ्य उन्नति के लिए सर्वांगसुन्दर व्यायाम, सूर्य नमस्कार, दण्ड-बैठक, कराटे, आत्मरक्षा एवं कमाण्डो ट्रेनिंग का प्राथमिक अभ्यास कराया जायेगा।

Personality development, discipline and leadership

आज प्रत्येक क्षेत्र में अत्यधिक प्रतिस्पर्धा होने के कारण युवा अपने व्यक्तित्व का निर्माण कैसे करे? इसका क्रियात्मक अभ्यास विभिन्न क्षेत्रों के विद्वानों एवं बुद्धिजीवियों के द्वारा कराया जायेगा।

Nation first, helps others

मानव व राष्ट्र की उन्नति निःस्वार्थ सेवा भाव द्वारा ही सम्भव है। हम किस प्रकार से मानव व राष्ट्र की उन्नति कर सकते हैं। साथ ही हमारा सामाजिक कर्तव्य क्या होना चाहिए?

★ अपील ★

यह युवा निर्माण का बृहद् यज्ञ आपके सहयोग से ही सफल हो सकता है। इस यज्ञ में अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग देकर पुण्य के भागी बनें व राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका को निश्चित करें। आप अपनी सहयोग राशि आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के नाम नकद, ड्राफ्ट/चैक द्वारा दल के बैंक खाता- कार्पोरेशन बैंक, खाता सं.-210600101005031, IFSC- CORP0002106, ब्रांच-वसुन्धरा, गाजियाबाद के नाम से दल के मुख्य कार्यालय आर्य समाज मिण्टो रोड, डी.डी.यू. मार्ग, नई दिल्ली-02 पर प्रेषित कर सकते हैं।

(दल को दी गई दानराशि आयकर की धारा 80जी के अन्तर्गत कर मुक्त है)

शिविर शुल्क 400 रू. शिविरार्थियों की आयु न्यूनतम 14 वर्ष हो शिविरार्थियों का गणवेश- दो खाकी निकर, दो सफेद सैण्डो बनियान, सफेद जूते-मोजे, एक कान तक लम्बी लाठी (स्वयं ला सकते हैं अथवा शिविर में खरीद सकते हैं), भोजन के बर्तन, हल्का बिस्तर व दैनिक उपयोग की वस्तुएं। **क्या न लायें-** मोबाइल, कैमरा, सोने के आभूषण आदि कीमती सामान। यदि लाते हैं तो पहले ही दिन शिविर बैंक में जमा करायें जो शिविर समापन के बाद में दिया जायेगा। **जो शिविरार्थी पूर्व में दो शिविर कर चुके हैं वे सभी 15 जून को शाम 3.00 बजे तक शिविर स्थल पर पहुँचें। शेष सभी 16 जून को शाम 3.00 बजे तक पहुँचें। बीमार युवक शिविर में न आयें।** नई दिल्ली, पुरानी दिल्ली से मेट्रो द्वारा सराय उतरें और बस या ऑटो द्वारा बदरपुर सराय से रेलवे फाटक पार कर गुरूकुल पहुँचे। अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें- 9810754638, 9811227215, 9873390596

★ निवेदक ★

जगवीर आर्य संचालक 9810264634	सुन्दर आर्य सहसंचालक 9899008054	बृहस्पति आर्य महामन्त्री 9990232164	जितेन्द्र भाटिया कोषाध्यक्ष 9811322155	रोहताश आर्य उपसंचालक 9891361321	वीरेश आर्य उपसंचालक 9868776103

आचार्य ऋषिपाल — आचार्य-गुरूकुल इन्द्रप्रस्थ

धर्मपाल आर्य (प्रधान), विनय आर्य (महामन्त्री) — दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

मा. रामपाल आर्य (प्रधान), उमेद सिंह आर्य (मंत्री) — हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा

मनोज आर्य व्यवस्था मंत्री 9717839393	पवन आर्य व्यवस्था मन्त्री 9911689450	संजय आर्य संगठन मन्त्री 9212323255	राजेश आर्य लेखानिरीक्षक 9990995500	रमेश आर्य उपसंचालक 9650415497	राजू आर्य उपसंचालक 9582071444	प्रेम आर्य संयुक्त उपसंचालक 9211811217	संजय आर्य संयुक्त उपसंचालक 9718157137	दिनेश आर्य प्रधान शिक्षक 9810754638

मुख्य कार्यालय:- आर्य समाज मिण्टो रोड, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002
E-mail-aryaveerdaldelhipradesh@gmail.com www.aryaveerdal.org

"युवा निर्माण" पत्रिका हेतु सदस्य बनें

"युवा निर्माण" पत्रिका के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में योगदान देने हेतु पत्रिका को व्यक्ति-व्यक्ति, घर-घर की आवाज बनाने के लिए इस पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनें। **वार्षिक शुल्क मात्र 150/- रुपये है।**

आवश्यक सूचना

आर्य वीर दल के इतिहास से सम्बन्धित आपके पास कोई लेख/पूर्व स्मृतियाँ हैं जो आर्य वीर दल में आने वाली पीढ़ियों को उसका लाभ पहुँचा सके, वह सब दल के ईमेल- aryaveerdaldelhipradesh@gmail.com या दल के मुख्य कार्यालय पर विषय को टाईप करवाकर भेज सकते हैं। आप वॉइस रिकॉर्डिंग के माध्यम से भी वाट्सऐप पर भेज सकते हैं। वाट्सऐप नं- 9990232164 है।

आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश का प्रयास है कि पूरे भारत में दल के गणवेश में एकरूपता हो। इस हेतु किसी भी प्रान्त को दल का गणवेश चाहिए तो वह आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश से सम्पर्क कर सकता है।
सम्पर्क सूत्र- 9810754638

आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश अपने कार्यों को दल के website : www.aryaveerdal.org व फेसबुक अकाउंट Arya Veer Dal Delhi Pradesh पर अपलोड करता है। आप सभी आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश के इन दोनों पेजो से जुड़े व उसको लाईक और शेयर करे।

"अनुपम दिनचर्या एवं गीताञ्जलि"

संकलनकर्त्ता- श्री दिनेश आर्य

यह सुन्दर कृति आप आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश के मुख्य कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं। सम्पर्क सूत्र-
9810754638, 9990232164

दल को आर्थिक सहयोग देने हेतु-

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश, कॉपोरेशन बैंक
खाता सं.-210600101005031,
IFSC- CORP0002106
ब्रांच-वसुन्धरा, गाजियाबाद

(संस्था को दी गई दानराशि आयकर की धारा 80जी के अन्तर्गत कर मुक्त है)
आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश, आर्यसमाज मिण्टो रोड, डी.डी.यू.मार्ग, निकट-रणजीत सिंह फ्लाईऑवर, नई दिल्ली-2 से प्रकाशित एवं 10/63 (i) क्रिएटिव प्लैनेट, कीर्ति नगर ओद्यौ. क्षेत्र, नई दिल्ली-110015 द्वारा मुद्रित
Email : aryaveerdaldelhipradesh@gmail.com | Web : www.aryaveerdal.org
सम्पादक : जगवीर आर्य 9810264634
सहसम्पादक : बृहस्पति आर्य 9990232164
व्यवस्थापक : जितेन्द्र भाटिया 9811322155
संस्था के समस्त अधिकारी संस्था में अवैतनिक सेवा प्रदान करते हैं

प्रेषित ____________________

____

____